❍ 29 / 06 / 22 की मुरली से चार्ट ❍

⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *पवित्रता का हथियाला बांधा ?*

➢➢ *ज्ञान अमृत पीया और पिलाया ?*

➢➢ *यथार्थ याद और सेवा के डबल लॉक द्वारा निर्विघन रहे ?*

➢➢ *स्नेह और शक्ति का बैलेंस से सफलता की अनुभूति की ?*

____

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ *इस कलियुगी तमोप्रधान जड़जड़ीभूत वृक्ष की दुर्दशा देखते हुए ब्रह्मा बाप को संकल्प आता है कि अभी-अभी बच्चों के तपस्वी रूप द्वारा, योग अग्नि द्वारा इस पुराने वृक्ष को भस्म कर दें,* परन्तु इसके लिए संगठन रूप में फुलफोर्स से योग ज्वाला प्रज्जवलित चाहिए। *तो ब्रह्मा बाप के इस संकल्प को अब साकार में लाओ।*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

✺ *"मैं बाप की समीपता द्वारा स्वप्न में भी मायाजीत आत्मा हूँ"*

〰✧ बाप के सदा समीप कौन रह सकता है? समीप रहने वाले की विशेषता क्या होगी? समान होंगे। *जो समान होता है वह समीप होता है। तो जैसे यह थोड़े समय की समीपता प्रिय लगती है, तो सदा समीप रहने वाले कितने प्रिय होंगे! तो सदा समीप रहते हो या सिर्फ थोड़े समय के लिए समीप हो?* समीप रहने के लिए भक्ति-मार्ग में भी सत्संग का बहुत महत्व है। संग रहो अर्थात् समीप रहो। वह तो सिर्फ सुनने वाले होते हैं और आप संग में रहने वाले हो।

〰✧ ऐसे हो? कभी मुख मोड़ तो नहीं लेते हो? माया आकर ऐसे मुख कर लेवे तो? सीता के माफिक माया को पहचान नहीं सको-ऐसे धोखा तो नहीं खाते हो? धोखा खाने वाले चन्द्रवंशी बन जाते हैं। तो अच्छी तरह से माया को पहचानने वाले हो ना। बाप को भी पहचाना और माया को भी अच्छी तरह से पहचाना। अभी वह नया रूप धारण करके आये तो भी पहचान लेंगे ना। या नया रूप देखकर के कहेंगे कि हमको क्या पता! शक्तियां पहचानती हो? या कभी-कभी घबरा जाती हो? *घबराते तब हैं जब बाप को किनारे कर देते हैं। अगर बाप के संग में हैं तो माया की हिम्मत नहीं जो समीप आ सके। तो पहचान ही लकीर है, इस पहचान की लकीर के अन्दर माया नहीं आ सकती।* तो लकीर के अन्दर रहते हो या कभी-कभी संकल्प से थोड़ा बाहर निकल आते हो?

~~✧ अगर संकल्प में भी साथ की लकीर से बाहर आ जाते हो तो माया के साथी बन जाते हो। संकल्प वा स्वप्न में भी बाप से किनारा नहीं। ऐसे नहीं कि स्वप्न तो मेरे वश में नहीं हैं। स्वप्न का भी आधार अपनी साकार जीवन है। अगर साकार जीवन में मायाजीत हो तो स्वप्न में भी माया अंश-मात्र में भी नहीं आ सकती। तो माया-प्रूफ हो जो स्वप्न में भी माया नहीं आ सकती? स्वप्न को भी हल्का नहीं समझो। क्योंकि जो स्वप्न में कमजोर होता है, तो उठने के बाद भी वह संकल्प जरूर चलेंगे और योग साधारण हो जायेगा। इसीलिए इतने विजयी बनो जो संकल्प से तो क्या लेकिन स्वप्न-मात्र भी माया वार नहीं कर सके। *सदा मायाजीत अर्थात् सदा बाप के समीप संग में रहने वाले। कोई की ताकत नहीं जो बाप के संग से अलग कर सके-ऐसे चैलेन्ज करने वाले हो ना। इतना दिल से आवाज निकले कि हम नहीं विजयी बनेंगे तो और कौन बनेंगे! कल्प पहले बने थे। सदा यह स्मृति में अनुभव हो-हम ही थे, हम ही हैं और हम ही रहेंगे।*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∫∫ 3 ∫∫ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

~~✧ जैसे *कोई भी सुगन्धित वस्तु सेकण्ड में अपना खुश्बू फैला देती है।* जैसे गुलाब का इसेन्स डालने से सेकण्ड में सारे वायुमण्डल में गुलाब की खुश्बू फैल जाती है। सभी अनुभव करते हैं कि गुलाब की खुश्बू बहुत अच्छी आ रही है। सभी का न चाहते भी अटेन्शन जाता है कि यह खुश्बू कहाँ से आ रही है।

~~✧ ऐसे ही *भिन्न-भिन्न शक्तियों का इसेन्स, शान्ति का, आनन्द का, प्रेम का, आप संगठित रूप में सेकण्ड में फैलाओ।* जिस इसेन्स का अकार्षण चारों ओर की आत्माओं को आये और अनुभव करें कि कहाँ से यह शान्ति का इसेन्स वा शान्ति के वायब्रेशन्स आ रहे हैं। जैसे अशान्त को अगर शान्ति मिल जाए वा प्यासे को पानी मिल जाए तो उनकी आँख खुल जाती है, बेहोशी से होश में आ जाते हैं।

~~✧ *ऐसे इस शान्ति वा आनन्द की इसेन्स के वायब्रेशन्स से अन्धे की औलाद अन्धे की तीसरी आँख खुल जाए।* अज्ञान की बेहोशी से इस होश में आ जाए कि यह कौन हैं, किसके बच्चे हैं, यह कौन-सी परम-पूज्य आत्मायें हैं। ऐसी रूहानी ड्रिल कर सकते हो?

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

~~✧ आज बाप-दादा मिलने के लिए आये हैं। मुरली तो बहुत सुनी है। *सर्व मुरलियों का सार एक ही शब्द है - 'बिन्दु' जिसमें सारा विस्तार समया हुआ है।* बिन्दु तो बन गये हो ना? बिन्दु बनना, बिन्दु को याद करना और जो कुछ बीता उसको बिन्दु लगाना। यह सहज अनुभव होता है ना? *यह अतिसूक्ष्म और अति शक्तिशाली है। जिससे आप सब भी सूक्ष्म फरिश्ता बन, मास्टर सर्व

शक्तिवान बन पार्ट बजाते हो।*

⟡° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

∬5∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

⟡° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

∬6∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- सिर्फ बाप का परिचय सबको देना"*

❉ *प्यारे बाबा :-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... जिन सच्ची खुशियो से आप बच्चों ने अपने दामन को सजाया है... उन खुशियो की छटा पूरे विश्व धरा पर भी बिखेरो... *सच्चे पिता का परिचय हर दिल आत्मा को देकर जनमो के बिछड़ेपन को मिटाओ.*.. किसी से भी बहस न कर... सिर्फ हर दिल को शिव पिता की यादो में भिगो दो..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा :-* "हाँ मेरे प्यारे बाबा... मैं आत्मा सबके जीवन में सच्ची खुशियो के फूल सजा रही हूँ... *मीठे बाबा आपका परिचय देकर हर दिल की प्यास बुझा रही हूँ.*.. सबको सच्चे सुखो का रास्ता बता रही हूँ... जनमो के थके तनमन को सच्ची आथत्त दिला रही हूँ..."

❉ *मीठे बाबा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... सच्चे पिता का परिचय देकर हर आत्मा को असीम सुखो से भर दो... अपने समान खुशनसीब हर दिल को बनाकर, सदा का पुण्यो का खाता बढ़ा लो... *ब्रहमा तन में शिव पिता बाहें फैलाकर पुकार रहा*... ज्यादा डिबेट न कर सिर्फ यह मीठी तान सुना आओ..."

➽➝ _ ➽➝ *मैं आत्मा :-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मै आत्मा कितनी महान भाग्यशाली हूँ की... आप समान खुशनसीब हर आत्मा को बना रही हूँ... दुखो में सूख गए अधरों पर, सच्ची मुस्कान सजा रही हूँ... *सच्चे माशूक से मिलवाकर, हर दिल आशिक को सच्चे प्रेम के अहसासो में डुबो रही हूँ.*.."

❉ *प्यारे बाबा :-* "मेरे सिकीलधे मीठे बच्चे... दुखो में दर दर पुकार रहे मेरे खोये बच्चों को मुझ सच्चे पिता से मिलवाओ... *देवताई फूलो को बागबाँ शिव पिता का परिचय दे आओ.*.. फिर से सुखो में खिलने का, गुणो संग महकने का मौसम पुनः आ गया है... बिना किसी बहस के यह आहट हर दिल को सुना आओ..."

➽➝ _ ➽➝ *मैं आत्मा :-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा ईश्वर पिता को मदद करने वाली कितनी सौभाग्यशाली हूँ... *मीठे बाबा आपसे बिछड़े बच्चों को आपके दिल के करीब ला रही हूँ..*. मीठा बाबा धरा पर स्वर्ग धरोहर सजाकर, आप बच्चों के लिए ले आया है... यह पुकार सबको सुना रही हूँ..."

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- पवित्रता का हथियाला बांधना है*"

➽➝ _ ➽➝ स्वार्थ की नींव पर टिके नश्वर देह के सम्बंध और देह की झूठी दुनिया के बारे में एकांत में बैठ मैं विचार कर रही हूँ कि *अपना सारा जीवन मनुष्य जिस देह और देह से जुड़े नश्वर सम्बन्धों को निभाने में गंवा देता है अन्त समय ना तो वो देह काम आती है और ना देह के सम्बन्धी काम आते हैं*। ये विचार करते - करते मेरी ही मृत्यु का सीन मेरी आँखों के सामने उभर आता है।

➻ _ ➻ मैं देख रही हूँ जैसे मैं आत्मा देह से बाहर हूँ और मेरा शरीर नीचे जमीन पर मृत पड़ा है। कोई हलचल नही एक दम जड़, सफेद वस्त्र से लिपटे अपने शरीर को मैं साक्षी होकर देख रही हूँ। *मेरी अर्थी सजाई जा रही है और मेरे शरीर का दाह संस्कार करने के लिए उसे अर्थी पर रख कर ले जाया जा रहा है। मैं देख रही हूँ अपने ही शरीर को लकड़ियों के ढ़ेर के ऊपर जिसे जलाया जा रहा है। और कुछ ही क्षणों में अपने उस शरीर को स्वाहा होते मैं देख रही हूँ*। शरीर जल चुका है और अब केवल उसकी राख ही मेरे सामने है।

➻ _ ➻ इस दृश्य की गहन अनुभूति मेरे अंदर इस नश्वर देह और दुनिया के प्रति वैराग्य उतपन्न कर रही है। *अपने प्यारे पिता की शिक्षाये मुझे सहज ही याद आ रही हैं जो बार - बार इस दुनिया से जीते जी मरने की प्रेरणा देती हैं, इस नश्वर संसार से ममत्व निकाल, बुद्धि से इस दुनिया का वैराग्य करने का पाठ पढ़ाती हैं*। वो सत्य परमात्मा इस समय स्वयं आकर, सत्य ज्ञान देकर उस सत्यता से हम आत्माओं को परिचित करवा रहें हैं जिससे हम आज दिन तक अनजान थे इसलिए झूठी देह और उससे जुड़े झूठे सम्बन्धो को ही सच मान बैठे थे। *किंतु अब जबकि बाबा ने आकर हर सच्चाई से हमे अवगत करा दिया है तो अब उनकी श्रीमत पर पूरी तरह चल कर इस दुनिया से दिल का वैराग्य रख, पावन बनने की उनसे की हुई प्रतिज्ञा को अब मुझे अवश्य पूरा करना हैं*।

➻ _ ➻ इसी दृढ़ संकल्प के साथ अपनी नश्वर देह के विनाश होने के सीन को पुनः स्मृति में लाकर, इस सत्यता को स्वीकार करके कि *"यह देह विनाशी है", मैं इस देह से जुड़ी सभी बातों से किनारा करके, हर संकल्प, विकल्प से अपने मन बुद्धि को हटाकर अपने सत्य अविनाशी स्वरूप पर एकाग्र कर लेती हूँ और सेकण्ड में अशरीरी स्थिति का अनुभव करते हुए अपने अति सुन्दर, सुखमय, शांत स्वरूप में खो जाती हूँ*। अपने सत्य स्वरूप में स्थित होकर गहन शांति और सुख का अनुभव करते हुए मैं देह का आधार छोड़ ऊपर खुले आसमान की ओर उड़ जाती हूँ। सारे पोलार का चक्कर लगाकर, सूर्य मण्डल और समस्त तारा मण्डल को पार करके, सूक्ष्म वतन से होती हुई मैं पहुँच जाती हूँ उस खूबसूरत लाल प्रकाश की दुनिया में जहाँ मणियो का आगार है।

➳ _ ➳ आत्माओं की इस निराकारी दुनिया में जगमग करते चमकते सितारों के रूप में जगमगाती चैतन्य मणियो को मैं देख रही हूँ। देह, देह की दुनिया का कोई संकल्प भी यहाँ नही है। गहन शांति ही शांति चारों और बिखरी हुई है। *गहन शांति की इस स्वीट दुनिया मे आकर, शांति के सागर अपने स्वीट बाबा के सानिध्य में बैठ, अब मैं आत्मा उनका सच्चा और निस्वार्थ प्रेम पा कर सपष्ट अनुभव कर रही हूँ कि झूठी देह और देह के सम्बन्धो से जुड़ा प्रेम केवल और केवल स्वार्थ से भरा है*।

➳ _ ➳ अपने दिलाराम मीठे बाबा का निस्वार्थ प्यार पा कर मैं सहज ही स्वयं को नष्टोमोहा अनुभव कर रही हूँ। बाबा का असीम प्यार और दुलार बाबा से आ रही सर्वशक्तियों की अनन्त किरणों के रूप में निरन्तर मुझ आत्मा के ऊपर बरस रहा है। *सर्वशक्तियों की शीतल छत्रछाया के नीचे मैं ऐसा अनुभव कर रही हूँ जैसे मीठी - मीठी फुहारें मेरे ऊपर निरन्तर बरस रही हैं। अतीन्द्रिय सुख के झूले में मैं आत्मा झूल रही हूँ*। बाबा से असीम स्नेह पा कर, सर्वशक्तियों से भरपूर हो कर अब मैं आत्मा वापिस लौट आती हूँ अपनी साकारी देह में।

➳ _ ➳ बाबा के प्रेम के रंग में रंगी अब मैं आत्मा देह और देह की दुनिया में रहते हुए भी स्वयं को इस नश्वर दुनिया से न्यारा अनुभव कर रही हूँ। इस नश्वर देह और देह से जुड़े सम्बन्धों के बीच रहते भी उनसे तोड़ निभाते अब मैं अपनी बुद्धि का योग केवल अपने प्यारे पिता के साथ जोड़ कर रखती हूँ। *प्रवृति में रहते, ट्रस्टी हो कर अब मैं अपनी हर लौकिक जिम्मेवारी सम्भालते, इस दुनिया से दिल का वैराग्य रख, पवित्र बनने में बहादुर बन कर, कमल पुष्प समान न्यारा और प्यारा जीवन व्यतीत कर रही हूँ और अपने अति मीठे प्यारे दिलाराम बाबा के साथ अपने पवित्र ब्राह्मण जीवन का मैं भरपूर आनन्द ले रही हूँ*।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं यथार्थ याद और सेवा के डबल लॉक द्वारा निर्विघ्न रहने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं फ़ीलिंगप्रूफ़ आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव स्नेह और शक्ति का बैलेंस रखती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव सफलता की अनुभूति करती हूँ ।*
✺ *मैं सफलतामूर्त आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ तीन प्रकार की प्रवृत्ति है - (1) लौकिक सम्बन्ध वा कार्य की प्रवृत्ति (2) अपने शरीर की प्रवृत्ति और (3) सेवा की प्रवृत्ति। तो *त्यागी जो हैं वह लौकिक प्रवृत्ति से पार हो गये लेकिन देह की प्रवृत्ति अर्थात् अपने आपको ही चलाने और बनाने में व्यस्त रहना वा देह भान की नेचर के वशीभूत रहना* और उसी नेचर के कारण ही बार-बार हिम्मतहीन बन जाते हैं। जो स्वयं भी

वर्णन करते कि समझते भी हैं, चाहते भी हैं लेकिन मेरी नेचर है। यह भी देह भान की, देह की प्रवृत्ति है। जिसमें शक्ति स्वरूप हो इस प्रवृत्ति से भी निवृत्त हो जाएँ - वह नहीं कर पाते। यह त्यागी की बात सुनाई

➻ _ ➻ लेकिन *महात्यागी लौकिक प्रवृत्ति, देह की प्रवृत्ति दोनों से निवृत्त हो जाते* - लेकिन सेवा की प्रवृत्ति में कहाँ-कहाँ निवृत्त होने के बजाए फँस जाते हैं। ऐसी आत्माओं को अपनी देह का भान भी नहीं सताता क्योंकि दिन-रात सेवा में मगन हैं। *देह की प्रवृत्ति से तो पार हो गये। इस दोनों ही त्याग का भाग्य - ज्ञानी और योगी बन गये, शक्तियों की प्राप्ति, गुणों की प्राप्ति हो गई।* ब्राह्मण परिवार में प्रसिद्ध आत्मायें बन गये। सेवाधारियों में वी.आई.पी. बन गये। महिमा के पुष्पों की वर्षा शुरू हो गई। माननीय और गायन योग्य आत्मायें बन गये लेकिन यह जो सेवा की प्रवृत्ति का विस्तार हुआ, उस विस्तार में अटक जाते हैं।

✺ *"ड्रिल :- सेवा की प्रवृति के विस्तार में स्वयं को नहीं अटकाना"*

➻ _ ➻ सेवा की भावना तो मनुष्यात्मा में रही है व उस *सेवा को करते ही उसके पीछे मान शान व स्वार्थ होता है... अभिमान होता है*... और उसके गीत गाते रहते हैं... मैंने ये किया... वो किया... उस की गई सेवा से मान शान पाकर ऊंची सीट तो ले ली... अल्पकाल का सुख भी प्राप्त कर लिया... झूठी शान शौकत जो कांटो से भरी सीट है उसे पाने के लिए बस बाहरी दिखावट और सुंदरता पर मरते गए... गुप्त दान महादान जिसका भक्ति में भी गायन है उसके सही अर्थ को नही समझ पाए... गाते भी रहे ये तन मन धन सब अर्पण... पर फिर भी मैं और मेरी में फंसे रहे... ये सब जो मुझे बाहर से दिख रहा है वैसा नही हैं... *मैं आत्मा कितनी भाग्यशाली हूं जो स्वयं भगवान ने मुझ आत्मा को सच्चा सच्चा गीता ज्ञान सुनाकर घोर अज्ञानता से दूर किया... दिव्य ज्ञान रुपी तीसरा नेत्र, दिव्य दृष्टि देकर ज्ञानवान बना दिया... वाह रे भाग्यवान मैं आत्मा!!*

➻ _ ➻ ये सब चिंतन करते चलते चलते मैं आत्मा पहुंच जाती हूं अपने सेंटर में... *देह व देह के सर्व सम्बंधों से डिटैच कर अपने को आत्मा निश्चय

कर बैठ जाती हूँ*... सामने संधली पर दीदी बैठी हैं व दीदीजी इन्स्ट्रूमेंट बन बाबा के महावाक्य सुना रही हैं व मैं आत्मा इन कानों द्वारा सुन रही हूँ... बाबा मुझ आत्मा को समझानी दे रहे हैं - बच्चे महादानी महात्यागी बनना है... महादानी वरदानी बनने के लिए महात्यागी बनना है... महात्यागी बनने के लिए सबसे पहले *देहभान का त्याग करना है... देह व देह के सर्व सम्बंधों का त्याग करना है... कर्मेन्द्रियजीत बनना है... देहभान के नेचर में वशीभूत नही होना है... देहभान की, देह की प्रवृति से निवृत होकर शक्तिस्वरुप बनना है...*

➳ _ ➳ जैसे मेहमान आता है व उसकी चाहे जितनी सेवा कर लो उसे यही स्मृति रहती है कि घर वापिस जाना है... ऐसे आपको *ये शरीर सेवार्थ मिला है... सेवा के लिए शरीर में आओ... शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करो... फिर अव्यक्त स्थिति में स्थित है जाओ*... अपने घर में आ जाओ... सेवाओं के विस्तार में अपने को अटकाओ नही... कि ये सेवा तो कोई और कर ही नही सकता... नामधारी नही बनो... रुहानी सेवाधारी बनो... सेवाओं के विस्तार में आकर बस सेवाओं में तो मगन हो... पर सेवाओं के विस्तार से माननीय बन देह अभिमान में नही आना... मैं आत्मा बाबा के महावाक्यों को अच्छी रीति धारण कर बाबा से प्रोमिस करती हूँ... और अपने को *आत्मिक स्वरुप में टिकाकर बस निमित्त समझ सेवार्थ साकार वतन में आती हूँ...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपने को निमित्त और ट्रस्टी समझ मन बुद्धि से सब बाबा को अर्पण कर हल्का महसूस कर रही हूँ... *ये शरीर भी बाबा की अमानत है... इसे बाबा जहां चाहे जैसे चाहे यूज करावे... बाबा का ही इन्स्ट्रूमेंट है... करनकरावनहार बस बाबा है*... मैं आत्मा करनहार बन हर सेवा को करते हुए बस प्यारे बाबा को समर्पित करती जा रही हूँ... मैं आत्मा पदमापदम भाग्यशाली हूँ जो बाबा ने मुझ आत्मा में कोई विशेषता देखी... जो मुझ आत्मा को अपने कार्य मे मददगार बनाया... ईश्वरीय सेवा मिलना बहुत बड़ी लाटरी है... मैं आत्मा बिंदु बन

बिंदु बाप के साथ सेवाओं के विस्तार करने में मदद कर रही हूँ... *कराने वाला करा रहा है... करनहार बस मैं तो निमित्त मात्र हूँ*... शुक्रिया बाबा शुक्रिया...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔